विद्रोही और राज

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» 1857 के विद्रोह का आरंभ और प्रसार

प्रश्न 1 (आसान). 1857 के विद्रोह की शुरुआत किस शहर से हुई थी?
उत्तर – मेरठ

प्रश्न 2 (आसान). मेरठ के बाद विद्रोही सिपाही किस मुख्य शहर की ओर गए?
उत्तर – दिल्ली

प्रश्न 3 (मध्यम). विद्रोह के दौरान दिल्ली में सिपाहियों ने किसे अपना नेता घोषित किया था?
उत्तर – बहादुर शाह ज़फर को

प्रश्न 4 (कठिन). 1857 के विद्रोह में सिपाहियों के साथ-साथ और कौन से लोग शामिल हुए और क्यों?
उत्तर – सिपाहियों के साथ-साथ शहर और गाँव के आम लोग, किसान और जमींदार भी शामिल हुए। वे अंग्रेज़ों के अत्याचारों और उनके पिट्ठू साहूकारों के शोषण से परेशान थे।

» विद्रोह का ढर्रा: सैन्य कार्रवाई और जनभागीदारी

प्रश्न 5 (आसान). 1857 के सैन्य विद्रोह में सिपाहियों ने सबसे पहले किस पर कब्ज़ा किया?
उत्तर – शस्त्रागार पर।

प्रश्न 6 (आसान). विद्रोह में आम लोग क्यों शामिल हुए?
उत्तर – वे साहूकारों और अमीरों को अपना उत्पीड़क और अंग्रेज़ों का पिट्ठू मानते थे।

प्रश्न 7 (मध्यम). विद्रोह शुरू करने के लिए क्या-क्या संकेत इस्तेमाल किए जाते थे?
उत्तर – शाम के समय तोप का गोला दागना या बिगुल बजाना।

प्रश्न 8 (कठिन). लखनऊ, कानपुर जैसे बड़े शहरों में विद्रोह का दायरा कैसे बढ़ा?
उत्तर – आम लोगों के साथ-साथ साहूकारों और अमीर लोगों के भी विद्रोहियों के गुस्से का शिकार बनने से, क्योंकि किसान उन्हें अंग्रेज़ों का पिट्ठू मानते थे।

» विद्रोह में संचार और समन्वय

प्रश्न 9 (आसान). 1857 के विद्रोह में सिपाही एक-दूसरे से मुख्य रूप से कैसे बात करते थे?
उत्तर – संदेशवाहकों और गोपनीय बैठकों (पंचायतों) के ज़रिए।

प्रश्न 10 (आसान). क्या सिपाही खुले में अपनी योजनाएं बनाते थे?
उत्तर – नहीं, वे गोपनीय बैठकें (पंचायतें) करते थे ताकि अंग्रेजों को पता न चले।

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर एक छावनी के सिपाही विद्रोह करने का फैसला लेते थे, तो वे दूसरी छावनी को कैसे बताते थे कि उन्होंने क्या फैसला लिया है?
उत्तर – वे पत्र लिखते थे और संदेशवाहकों के ज़रिए उन्हें दूसरी छावनी तक पहुंचाते थे, जिसमें वे अपना फैसला और आगे की योजना बताते थे।

प्रश्न 12 (कठिन). विद्रोहियों द्वारा संचार और समन्वय स्थापित करने के तरीके, जैसे कि 'पंचायतें', यह किस बात का प्रमाण हैं कि विद्रोह सिर्फ अचानक भड़का हुआ गुस्सा नहीं था?
उत्तर – यह इस बात का प्रमाण है कि विद्रोह सिर्फ अचानक भड़का गुस्सा नहीं था, बल्कि इसके पीछे गहरी योजना, तालमेल और संगठित प्रयास थे। 'पंचायतें' दर्शाती हैं कि सिपाही सोच-समझकर फैसले लेते थे और पूरे आंदोलन को एक दिशा देने की कोशिश करते थे।

» विद्रोह के नेता और अनुयायी

प्रश्न 13 (आसान). दिल्ली में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?
उत्तर – बहादुर शाह ज़फर

प्रश्न 14 (आसान). कानपुर में विद्रोह के नेता कौन थे?
उत्तर – नाना साहिब

प्रश्न 15 (मध्यम). रानी लक्ष्मीबाई ने किस जगह के विद्रोह का नेतृत्व किया और क्या वे शुरुआत में इसके लिए तैयार थीं?
उत्तर – रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी के विद्रोह का नेतृत्व किया, लेकिन वे शुरुआत में जनता के दबाव में नेतृत्व संभालने को मजबूर हुईं।

प्रश्न 16 (कठिन). मौलवी अहमदुल्ला शाह कौन थे और उन्हें किस नाम से जाना जाता था? विद्रोह में उनकी भूमिका का वर्णन करें।
उत्तर – मौलवी अहमदुल्ला शाह एक धार्मिक नेता थे जो 1857 के विद्रोह में सक्रिय थे। उन्हें 'डंका शाह' के नाम से जाना जाता था क्योंकि वे पालकी में बैठकर ढोल के साथ घूमते और जिहाद का प्रचार करते थे। उन्होंने अवध में लोगों को ब्रिटिश राज के खिलाफ एकजुट किया और कई लड़ाइयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

» अफवाहें और भविष्यवाणियाँ

प्रश्न 17 (आसान). 1857 के विद्रोह से जुड़ी किन्हीं दो अफवाहों के नाम बताओ।
उत्तर – चर्बी वाले कारतूस और आटे में हड्डी का चूरा।

प्रश्न 18 (आसान). किस युद्ध की 100वीं वर्षगांठ से जुड़ी भविष्यवाणी 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण थी?
उत्तर – प्लासी का युद्ध।

प्रश्न 19 (मध्यम). अंग्रेजों ने चर्बी वाले कारतूसों की अफवाह को रोकने के लिए क्या किया, लेकिन वे सफल क्यों नहीं हुए?
उत्तर – अंग्रेजों ने सिपाहियों को समझाने की बहुत कोशिश की कि अफवाह गलत है, लेकिन वे असफल रहे क्योंकि सिपाहियों के मन में पहले से ही अंग्रेजों के प्रति अविश्वास और डर बैठ चुका था।

प्रश्न 20 (कठिन). चपातियाँ बांटने की गतिविधि का क्या महत्व था, भले ही उसका स्पष्ट अर्थ न पता हो?
उत्तर – चपातियाँ बांटने से लोगों को यह संकेत मिला कि कुछ बड़ी उथल-पुथल आने वाली है, जिससे उनमें एकजुटता और विद्रोह के लिए तैयारी की भावना पैदा हुई।

» अफवाहों पर विश्वास करने के कारण

प्रश्न 21 (आसान). अंग्रेजों ने कौन सी सामाजिक प्रथाओं पर रोक लगाकर भारतीयों में डर पैदा किया?
उत्तर – सती प्रथा और विधवा पुनर्विवाह जैसे सुधारों से लोगों को लगा कि अंग्रेज उनके धर्म और संस्कृति में हस्तक्षेप कर रहे हैं।

प्रश्न 22 (आसान). 'हड़प नीति' (Doctrine of Lapse) क्या थी, और इसका क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – यह एक नीति थी जिससे अंग्रेज बिना वारिस वाले राज्यों को अपने कब्जे में ले लेते थे, जिससे भारतीय राजाओं और जनता में असंतोष फैल गया।

प्रश्न 23 (मध्यम). अंग्रेजों की शिक्षा नीति ने किस तरह अफवाहों पर विश्वास को बढ़ावा दिया?
उत्तर – पश्चिमी शिक्षा के प्रसार और ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों से भारतीयों को लगा कि अंग्रेज उनके पारंपरिक शिक्षा और धर्म को खत्म करके उन्हें ईसाई बनाना चाहते हैं।

प्रश्न 24 (कठिन). 1857 से पहले कौन सी तीन प्रमुख ब्रिटिश नीतियाँ थीं जिन्होंने भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति गहरा संदेह और अविश्वास पैदा किया?
उत्तर – पश्चिमी शिक्षा और सामाजिक सुधार, रियासतों पर कब्ज़े की नीति (जैसे हड़प नीति), और भू-राजस्व व्यवस्था में किए गए बदलाव।

» अवध में विद्रोह: 'ये गिलास फल'

प्रश्न 25 (आसान). लॉर्ड डलहौज़ी ने अवध रियासत के बारे में 1851 में क्या कहा था?
उत्तर – उन्होंने कहा था, 'ये गिलास फल एक दिन हमारे ही मुँह में आकर गिरेगा।'

प्रश्न 26 (आसान). अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में किस वर्ष मिलाया गया?
उत्तर – अवध को 1856 में ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया गया था।

प्रश्न 27 (मध्यम). अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का अंग्रेजों का मुख्य बहाना क्या था और असली वजह क्या थी?
उत्तर – मुख्य बहाना 'कुशासन' का आरोप था। असली वजह अवध की उपजाऊ ज़मीन, नील और कपास की खेती की संभावना, और उत्तरी भारत के बड़े बाज़ार के रूप में उसकी अहमियत थी।

प्रश्न 28 (कठिन). अवध के अधिग्रहण से वहाँ के लोगों, विशेषकर नवाब, तालुकेदारों और किसानों पर क्या प्रभाव पड़ा, जिससे 1857 का विद्रोह और तीव्र हो गया?
उत्तर – नवाब वाजिद अली शाह को हटाने से लोग दुखी और अपमानित महसूस करने लगे। तालुकेदारों की ज़मीनें और किले छीन लिए गए, उनकी सेनाएँ भंग कर दी गईं, जिससे उनकी शक्ति समाप्त हो गई। किसानों पर मनमाने राजस्व का बोझ बढ़ गया और उन्हें अंग्रेजों से कोई सहायता नहीं मिली। इस सबके कारण सभी वर्गों में गहरा असंतोष फैला और उन्होंने मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया।

» नवाब वाजिद अली शाह का निष्कासन और उसके प्रभाव

प्रश्न 29 (आसान). नवाब वाजिद अली शाह को किस साल निष्कासित किया गया था?
उत्तर – 1856

प्रश्न 30 (आसान). अंग्रेजों ने नवाब वाजिद अली शाह को हटाने के लिए क्या बहाना बनाया था?
उत्तर – कुशासन का आरोप

प्रश्न 31 (मध्यम). नवाब के निष्कासन से लखनऊ की दरबारी संस्कृति पर क्या असर पड़ा था?
उत्तर – दरबारी संस्कृति का अंत हो गया, जिससे कलाकार, संगीतकार और अन्य दरबारी रोज़गारहीन हो गए।

प्रश्न 32 (कठिन). नवाब वाजिद अली शाह के निष्कासन को 1857 के विद्रोह का एक महत्वपूर्ण कारण क्यों माना जाता है?
उत्तर – नवाब की लोकप्रियता और लोगों का उनके प्रति गहरा लगाव था। उनके निष्कासन को अवध की जनता ने अपना अपमान समझा, और इससे ब्रिटिश शासन के प्रति गहरा गुस्सा व अविश्वास पैदा हुआ, जिसने विद्रोह की आग को और भड़का दिया।

» तालुकदारों और किसानों पर ब्रिटिश नीति का प्रभाव

प्रश्न 33 (आसान). अवध में 'एकमुश्त बंदोबस्त' कब लागू किया गया था?
उत्तर – 1856 में

प्रश्न 34 (आसान). ब्रिटिश भूराजस्व अधिकारियों का तालुकदारों के बारे में क्या मानना था?
उत्तर – वे उन्हें बिचौलिया और ज़मीन पर बलपूर्वक कब्ज़ा करने वाला मानते थे।

प्रश्न 35 (मध्यम). तालुकदारों से ज़मीनें छीनने के बाद क्या किसानों की स्थिति में सुधार आया था? समझाइए।
उत्तर – नहीं, किसानों की स्थिति में सुधार नहीं आया। भूराजस्व वसूली में तो वृद्धि हुई, लेकिन किसानों का बोझ कम नहीं हुआ। कई स्थानों पर राजस्व मांग में 30 से 70 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हो गई थी, जिससे किसान और ज़्यादा आर्थिक दबाव में आ गए।

प्रश्न 36 (कठिन). तालुकदारों और किसानों पर ब्रिटिश नीति के क्या दीर्घकालिक परिणाम हुए, और इसने 1857 के विद्रोह में कैसे योगदान दिया?
उत्तर – ब्रिटिश नीति ने तालुकदारों की ज़मीनें छीनकर उनकी सामाजिक और आर्थिक शक्ति को खत्म कर दिया, जिससे एक पूरी पुरानी सामाजिक व्यवस्था भंग हो गई। किसान जो पहले तालुकदारों से बुरे वक़्त में मदद पाते थे, अब मनमाने राजस्व और कठोर वसूली के कारण अंग्रेजों से बुरी तरह पिसने लगे। इस गहरे असंतोष ने उन्हें विद्रोह में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। अवध के कई तालुकदार नवाब के प्रति वफ़ादार थे और उन्होंने अपने किसानों के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ़ ज़ोरदार प्रतिरोध किया, जिससे विद्रोह को एक मज़बूत आधार मिला।

» सिपाहियों और ग्रामीण जगत के बीच संबंध

प्रश्न 37 (आसान). ब्रिटिश 'बंगाल आर्मी' में ज़्यादातर सिपाही किस क्षेत्र से आते थे?
उत्तर – अवध और पूर्वी उत्तर प्रदेश।

प्रश्न 38 (आसान). अवध को 'बंगाल आर्मी की पौधशाला' क्यों कहा जाता था?
उत्तर – क्योंकि यहाँ से बड़ी संख्या में सिपाही भर्ती होते थे।

प्रश्न 39 (मध्यम). सिपाहियों के असंतोष के दो मुख्य कारण बताओ जो ग्रामीण जगत से जुड़े थे?
उत्तर – गाँवों में ज़मीनों और लगान की समस्याएँ, और अंग्रेज़ अफ़सरों का नस्लीय भेदभाव व दुर्व्यवहार।

प्रश्न 40 (कठिन). विद्रोह के समय सिपाहियों और ग्रामीण लोगों के बीच के संबंध ने जनविद्रोह के स्वरूप को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – इस संबंध ने विद्रोह को केवल सिपाहियों के एक सैन्य विद्रोह तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे एक व्यापक जन-आंदोलन बना दिया, जहाँ गाँव के लोग भी सिपाहियों के समर्थन में आकर खड़े हो गए।

» विद्रोहियों के उद्देश्य: एकता की कल्पना और 'फिरंगी राज' का विरोध

प्रश्न 41 (आसान). विद्रोहियों ने अपनी बात लोगों तक पहुंचाने के लिए किन माध्यमों का प्रयोग किया?
उत्तर – घोषणाओं और इश्तहारों का।

प्रश्न 42 (आसान). विद्रोहियों का 'फिरंगी राज' से क्या मतलब था?
उत्तर – ब्रिटिश शासन या अंग्रेजों का राज।

प्रश्न 43 (मध्यम). विद्रोहियों ने किस प्रकार हिंदू और मुस्लिम एकता को बढ़ावा दिया?
उत्तर – उन्होंने घोषणाओं में दोनों धर्मों को समान रूप से संबोधित किया, अतीत में मुगल शासन के दौरान सह-अस्तित्व का उदाहरण दिया और बताया कि अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई दोनों का साझा हित है।

प्रश्न 44 (कठिन). 'फिरंगी राज' के विरोध में विद्रोहियों ने कौन सी ब्रिटिश नीतियों को खारिज किया?
उत्तर – उन्होंने ज़मींदारी बंदोबस्त (जिससे ज़मींदार बर्बाद हुए), अंग्रेजों का व्यापार पर एकाधिकार (जिससे देसी व्यापारी नुकसान में थे), सरकारी नौकरियों में भारतीयों के साथ भेदभाव, और इंग्लैंड में बने सामानों से देसी कारीगरों की बेरोज़गारी जैसी सभी ब्रिटिश नीतियों को खारिज किया।

» वैकल्पिक सत्ता की तलाश

प्रश्न 45 (आसान). 1857 में विद्रोहियों ने कौन से बड़े शहरों में अपनी सरकार बनाने की कोशिश की?
उत्तर – दिल्ली, लखनऊ, कानपुर।

प्रश्न 46 (आसान). विद्रोहियों ने अपनी शासन व्यवस्था बनाने के लिए किस पुरानी शैली से प्रेरणा ली?
उत्तर – अठारहवीं सदी की मुगल दुनिया से।

प्रश्न 47 (मध्यम). वैकल्पिक सत्ता की तलाश में विद्रोहियों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – ब्रिटिश शासन को हटाकर अपनी एक शासन व्यवस्था स्थापित करना और युद्ध की जरूरतों को पूरा करना।

प्रश्न 48 (कठिन). विद्रोहियों द्वारा स्थापित ये वैकल्पिक शासन संरचनाएँ ज़्यादा समय तक क्यों नहीं चल पाईं?
उत्तर – अंग्रेजों ने अपनी सैनिक शक्ति और कानूनों के बल पर विद्रोह को बहुत क्रूरता से दबा दिया, जिससे ये संरचनाएं टिक नहीं पाईं।

» ब्रिटिश दमन और विजय

प्रश्न 49 (आसान). मार्शल लॉ क्या था?
उत्तर – मार्शल लॉ में सामान्य अदालती प्रक्रियाएं रोक दी जाती हैं और सैनिक अधिकारी या आम अंग्रेज भी विद्रोहियों को तुरंत सजा दे सकते थे।

प्रश्न 50 (आसान). अंग्रेजों ने विद्रोह को कुचलने के लिए कौन से दो प्रमुख तरीकों का इस्तेमाल किया?
उत्तर – उन्होंने सैन्य बल का प्रयोग किया और नए कठोर कानून बनाए।

प्रश्न 51 (मध्यम). अवध में विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों को इतनी मुश्किल क्यों हुई?
उत्तर – अवध में अंग्रेजों को इसलिए मुश्किल हुई क्योंकि वहां की लगभग तीन-चौथाई वयस्क पुरुष आबादी विद्रोह में शामिल थी, यानी यह एक बहुत बड़े जन-समर्थन वाला आंदोलन था।

प्रश्न 52 (कठिन). विद्रोह के दौरान अंग्रेजों ने जमींदारों की एकता को तोड़ने के लिए क्या रणनीति अपनाई?
उत्तर – उन्होंने वफादार जमींदारों को उनकी जागीरें वापस देने का वादा किया और विद्रोह में शामिल जमींदारों को जमीन से बेदखल कर दिया, जिससे उनकी एकता कमजोर हो गई।

» विद्रोह की छवियाँ: ब्रिटिश कला और प्रचार

प्रश्न 53 (आसान). 'रिलीफ ऑफ लखनऊ' पेंटिंग में किन ब्रिटिश नायकों को दर्शाया गया था?
उत्तर – कैंपबेल, ऑट्रम और हैवलॉक।

प्रश्न 54 (आसान). 'जस्टिस' पेंटिंग में न्याय की देवी के हाथ में क्या-क्या था?
उत्तर – एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में ढाल।

प्रश्न 55 (मध्यम). ब्रिटिश कलाकारों ने विद्रोहियों को आमतौर पर किस रूप में दर्शाया?
उत्तर – दानवों, बर्बर और हिंसक लोगों के रूप में।

प्रश्न 56 (कठिन). यह कलाकृतियाँ ब्रिटिश जनता में कौन सी मुख्य भावनाएँ जगाना चाहती थीं?
उत्तर – ब्रिटिश नायकों के प्रति गौरव, विद्रोहियों के प्रति गुस्सा और प्रतिशोध की भावना, और ब्रिटिश सत्ता में विश्वास।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. प्रश्न: 1857 के विद्रोह की शुरुआत कहाँ से हुई और इसने कैसे दिल्ली तक का सफर तय किया?

› स्टेप 1: 10 मई 1857 की दोपहर को मेरठ छावनी में सिपाहियों ने विद्रोह की शुरुआत की। इसकी वजह थी नए कारतूसों में लगी चर्बी, जिससे उनका धर्म भ्रष्ट होने का डर था।

› स्टेप 2: सिपाहियों ने पहले मेरठ में अंग्रेज़ अधिकारियों पर हमला किया, सरकारी इमारतों को लूटा और जलाया। उन्होंने शस्त्रागार पर भी कब्ज़ा कर लिया।

› स्टेप 3: इसके बाद, सिपाहियों का एक बड़ा जत्था घोड़ों पर सवार होकर रात में ही दिल्ली की ओर चल पड़ा। उन्होंने टेलीग्राफ लाइनें भी काट दीं ताकि अंग्रेजों को खबर न मिल सके।

› स्टेप 4: अगले दिन, 11 मई को, वे दिल्ली में लाल किले के गेट पर पहुँच गए। वहां उन्होंने अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फर से विद्रोह का नेतृत्व स्वीकार करने की अपील की।

› स्टेप 5: बहादुर शाह ज़फर ने दबाव में आकर सिपाहियों का नेतृत्व स्वीकार कर लिया। इससे विद्रोह को एक 'वैधता' मिल गई, क्योंकि अब वह मुगल सम्राट के नाम पर लड़ा जा रहा था।

उत्तर – 1857 के विद्रोह की शुरुआत 10 मई 1857 को मेरठ में हुई थी, जब सिपाहियों ने चर्बी वाले कारतूसों के खिलाफ विद्रोह किया। इसके बाद वे दिल्ली पहुँचे, जहाँ 11 मई को बहादुर शाह ज़फर को अपना नेता घोषित कर उन्होंने विद्रोह का प्रसार किया।

उदाहरण 2. अगर 1857 के सैन्य विद्रोह को एक क्रम में समझाना हो, तो शुरुआत से आम लोगों के जुड़ने तक के मुख्य चरणों को बताओ।

› पहला चरण: विद्रोह का संकेत - किसी एक छावनी में तोप का गोला दागा गया या बिगुल बजाया गया, जो विद्रोह शुरू करने का इशारा था।

› दूसरा चरण: सैन्य कार्रवाई - सिपाहियों ने सबसे पहले सरकारी शस्त्रागारों पर कब्ज़ा किया और सरकारी खज़ानों को लूटा।

› तीसरा चरण: सरकारी संस्थानों पर हमला - उन्होंने जेलों, टेलीग्राफ दफ्तरों, रिकॉर्ड रूम, और सरकारी बंगलों जैसी इमारतों को निशाना बनाया, और सारे रिकॉर्ड जला दिए। 'गोरों' यानी अंग्रेज़ों से जुड़ी हर चीज़ और हर व्यक्ति उनके निशाने पर था।

› चौथा चरण: जनभागीदारी - धीरे-धीरे आम लोग भी इस विद्रोह में शामिल हो गए। किसानों और आम जनता ने साहूकारों और अमीर लोगों के घरों को लूटा, क्योंकि उन्हें ये अंग्रेज़ों के समर्थक और अपने शोषक लगते थे।

› पांचवां चरण: विद्रोह का दायरा बढ़ना - इस तरह विद्रोह सिर्फ सिपाहियों तक सीमित न रहकर एक जन-विद्रोह बन गया, और इसका दायरा बहुत बढ़ गया।

› छठा चरण: नेताओं का उभार - इसके बाद विद्रोह को नेतृत्व देने के लिए बहादुर शाह ज़फर, नाना साहेब, रानी लक्ष्मीबाई जैसे नेता सामने आए।

उत्तर – 1857 के विद्रोह के मुख्य चरण थे: संकेत -> सैन्य कार्रवाई (शस्त्रागार लूटना, सरकारी इमारतें नष्ट करना) -> जनभागीदारी (आम लोगों और किसानों का शामिल होना) -> विद्रोह का दायरा बढ़ना -> नेताओं का उभार।

उदाहरण 3. मान लीजिए अवध की 7वीं इन्फैंट्री को पता चला कि नए कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी है और उन्होंने उसे इस्तेमाल करने से मना कर दिया। अब उन्हें पास की 48वीं नेटिव इन्फैंट्री से यह खबर साझा करनी है और उनसे राय लेनी है कि आगे क्या करें। वे यह सूचना एक-दूसरे तक कैसे पहुंचाते थे?

› पहला कदम: 7वीं इन्फैंट्री के सिपाही एक गुप्त संदेश तैयार करेंगे जिसमें अपनी समस्या और फैसला बताएंगे।

› दूसरा कदम: वे किसी भरोसेमंद सिपाही या संदेशवाहक को चुनेंगे जो यह संदेश लेकर 48वीं नेटिव इन्फैंट्री तक जाएगा।

› तीसरा कदम: संदेशवाहक छिपते-छिपाते, बिना अंग्रेजों की नज़र में आए, दूसरी छावनी तक पहुंचेगा।

› चौथा कदम: 48वीं इन्फैंट्री के सिपाही संदेश को समझेंगे, आपस में पंचायत करेंगे और अपना जवाब या समर्थन वापस उसी संदेशवाहक के हाथ भेजेंगे।

उत्तर – इस तरह, संदेशवाहक और गोपनीय 'पंचायत' प्रणाली के ज़रिए एक छावनी से दूसरी छावनी तक सूचना और योजनाएं पहुंचाई जाती थीं।

उदाहरण 4. 1857 के विद्रोह में विभिन्न स्थानों पर कौन-कौन से प्रमुख नेता थे, और क्या उनका नेतृत्व एक समान था?

› पहला कदम है विभिन्न स्थानों पर प्रमुख नेताओं की पहचान करना। जैसे दिल्ली में बहादुर शाह ज़फर, कानपुर में नाना साहिब, झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई, बिहार में कुंवर सिंह।

› दूसरा कदम, यह समझना कि क्या ये सब अपनी मर्ज़ी से नेता बने थे या मजबूरन। जैसे बहादुर शाह शुरुआत में डर रहे थे, उन्हें सिपाहियों ने दबाव डालकर नेता बनाया। रानी लक्ष्मीबाई भी जनता के दबाव में नेतृत्व संभालने को मजबूर हुईं।

› तीसरा कदम, हमें यह भी देखना होगा कि कुछ स्थानीय नेता भी थे, जो सीधे शाही परिवारों से नहीं थे। जैसे उत्तर प्रदेश के बड़ौत परगना के शाह मल, जिन्होंने अपने इलाके के किसानों को संगठित किया।

› चौथा कदम, मौलवी अहमदुल्ला शाह जैसे धार्मिक नेता भी थे जिन्होंने जिहाद का प्रचार करके लोगों को जोड़ा, जिन्हें 'डंका शाह' भी कहा जाता था।

उत्तर – 1857 के विद्रोह में दिल्ली में बहादुर शाह, कानपुर में नाना साहिब, झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई, बिहार में कुंवर सिंह जैसे प्रमुख नेता थे। इनका नेतृत्व हमेशा एक समान नहीं था; कुछ ने दबाव में नेतृत्व संभाला, जबकि शाह मल और मौलवी अहमदुल्ला शाह जैसे स्थानीय और धार्मिक नेताओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में लोगों को संगठित करके अहम भूमिका निभाई।

उदाहरण 5. 1857 के विद्रोह में फैली चर्बी वाले कारतूस की अफवाह ने सिपाहियों को कैसे प्रभावित किया?

› पहला कदम: सिपाहियों को नई एनफील्ड राइफलें मिली थीं।

› दूसरा कदम: अफवाह फैली कि इन राइफलों के कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी लगी हुई है।

› तीसरा कदम: गाय हिंदुओं के लिए पवित्र है और सूअर मुसलमानों के लिए हराम। कारतूस को दांत से काटना पड़ता था।

› चौथा कदम: सिपाहियों को लगा कि अंग्रेज उनके धर्म को भ्रष्ट करना चाहते हैं।

› पांचवां कदम: इस अफवाह से सिपाही भड़क उठे और उन्होंने इन कारतूसों का इस्तेमाल करने से मना कर दिया, जिससे विद्रोह की शुरुआत हुई।

उत्तर – चर्बी वाले कारतूसों की अफवाह ने सिपाहियों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाई, जिससे वे क्रोधित होकर विद्रोह में शामिल हो गए।

उदाहरण 6. 1857 के विद्रोह के समय भारतीय लोग अंग्रेजों द्वारा फैलाई गई अफवाहों पर आसानी से विश्वास क्यों कर लेते थे? किन्हीं तीन मुख्य कारणों का उल्लेख कीजिए।

› पहला कारण: ब्रिटिश शिक्षा और सामाजिक सुधार नीतियाँ। अंग्रेजों ने पश्चिमी शिक्षा और ईसाई धर्म का प्रचार किया। साथ ही सती प्रथा पर रोक, विधवा पुनर्विवाह जैसे सामाजिक सुधारों को लागू किया। भारतीयों को लगा कि अंग्रेज उनकी संस्कृति और धर्म को नष्ट करना चाहते हैं।

› दूसरा कारण: रियासतों पर कब्ज़ा करना। अंग्रेजों ने 'हड़प नीति' (Doctrine of Lapse) जैसे तरीकों से कई भारतीय रियासतों (जैसे झांसी, सतारा) को अपने राज्य में मिला लिया। इससे राजाओं और आम जनता दोनों के मन में बहुत गुस्सा और अविश्वास भर गया।

› तीसरा कारण: भू-राजस्व व्यवस्था में बदलाव। अंग्रेजों ने नई भू-राजस्व नीतियाँ (जैसे स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी) लागू कीं, जिससे किसानों पर लगान का बोझ बढ़ गया और उनकी ज़मीनें छीन ली गईं। इससे किसानों और ज़मींदारों में असंतोष फैला, और उन्हें लगा कि अंग्रेज सिर्फ उनका शोषण करना चाहते हैं।

› निष्कर्ष: इन सभी नीतियों और कार्यों ने भारतीयों के मन में अंग्रेजों के प्रति गहरा संदेह और अविश्वास पैदा कर दिया था, जिसके कारण वे किसी भी अफवाह पर तुरंत विश्वास कर लेते थे, खासकर अगर वह अंग्रेजों के खिलाफ हो।

उत्तर – ब्रिटिश शिक्षा और सामाजिक सुधारों से धर्म और संस्कृति पर हमले का डर, रियासतों पर कब्ज़े से राजाओं और जनता में असंतोष, तथा भू-राजस्व नीतियों से किसानों और ज़मींदारों का शोषण - इन सबने मिलकर लोगों में इतना अविश्वास भर दिया कि वे अफवाहों पर आसानी से विश्वास कर लेते थे।

उदाहरण 7. 1857 के विद्रोह में अवध की क्या भूमिका थी और इसे ब्रिटिश साम्राज्य में कब और क्यों मिलाया गया?

› पहले यह समझो कि अवध उत्तर भारत का एक महत्वपूर्ण और समृद्ध क्षेत्र था, और लोग नवाब वाजिद अली शाह से बहुत प्रेम करते थे।

› अंग्रेजों ने 1801 में ही अवध पर 'सहायक संधि' थोप दी थी, जिससे नवाब की सेना कमज़ोर हो गई और उसे अंग्रेजों पर निर्भर रहना पड़ा।

› लॉर्ड डलहौज़ी की नज़र अवध की नील और कपास की खेती वाली ज़मीन और बड़े बाज़ार पर थी।

› 1856 में, अंग्रेजों ने नवाब वाजिद अली शाह पर 'कुशासन' का झूठा आरोप लगाकर उन्हें गद्दी से हटा दिया और अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

› इस अधिग्रहण से न सिर्फ नवाब, बल्कि तालुकेदारों, किसानों और सिपाहियों में भी गहरा असंतोष फैला, जो 1857 के विद्रोह का एक प्रमुख कारण और केंद्र बना।

› अवध में लोगों ने इस 'फिरंगी राज' को अपनी दुनिया का ख़ात्मा माना और पूरे ज़ोर-शोर से विद्रोह में शामिल हुए।

उत्तर – अवध को 1856 में 'कुशासन' के आरोप पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया गया था। यह अधिग्रहण लोगों के गहरे असंतोष का कारण बना और अवध 1857 के विद्रोह का एक प्रमुख केंद्र बन गया, जहाँ तालुकेदारों और किसानों ने मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

उदाहरण 8. नवाब वाजिद अली शाह को कब और किस बहाने निष्कासित किया गया था, तथा इस घटना के अवध की जनता पर क्या मुख्य प्रभाव पड़े?

› नवाब वाजिद अली शाह को 1856 में निष्कासित किया गया था।

› अंग्रेजों ने 'कुशासन' (यानी, ठीक से शासन न करने) का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा कि नवाब अपनी प्रजा की देखभाल नहीं कर रहे थे।

› इस निष्कासन से अवध की जनता को गहरा भावनात्मक आघात लगा, क्योंकि नवाब बहुत लोकप्रिय थे।

› लखनऊ की दरबारी संस्कृति और उससे जुड़े कलाकारों, संगीतकारों, कवियों, और शिल्पकारों की रोज़ी-रोटी छिन गई।

› कई सैनिक और अधिकारी, जो नवाब की सेना में थे, बेरोज़गार हो गए, जिससे आर्थिक समस्याएँ बढ़ गईं।

› इस घटना ने 1857 के विद्रोह के लिए ज़मीन तैयार की, क्योंकि लोगों को लगा कि अंग्रेजों ने अन्याय किया है।

उत्तर – नवाब वाजिद अली शाह को 1856 में 'कुशासन' का आरोप लगाकर निष्कासित किया गया था। इसके मुख्य प्रभावों में जनता का गहरा भावनात्मक दुख, दरबारी संस्कृति का अंत, और लाखों लोगों की रोज़ी-रोटी का छिन जाना शामिल है, जिसने 1857 के विद्रोह को बढ़ावा दिया।

उदाहरण 9. अंग्रेजों की 'एकमुश्त बंदोबस्त' नीति का अवध के तालुकदारों पर क्या असर हुआ था?

› पहला कदम: अंग्रेजों ने अवध को जीतने के बाद 1856 में 'एकमुश्त बंदोबस्त' नाम की नई भूराजस्व व्यवस्था लागू की।

› दूसरा कदम: इस बंदोबस्त के तहत, अंग्रेजों ने तालुकदारों को बिचौलिया माना और उनकी ज़मीनों के मालिकाना हक़ को मानने से इनकार कर दिया।

› तीसरा कदम: उन्होंने यह माना कि तालुकदारों ने बल और धोखे से अपनी ज़मीनों पर कब्ज़ा किया हुआ है।

› चौथा कदम: इस नीति के कारण, अवध के तालुकदारों से उनकी ज़मीनें बड़े पैमाने पर छीन ली गईं। आंकड़ों के अनुसार, अंग्रेजों के आने से पहले उनके पास 67% गाँव थे, जो इस बंदोबस्त के बाद घटकर 38% रह गए।

› पांचवां कदम: इसका परिणाम यह हुआ कि तालुकदारों की सामाजिक और आर्थिक हैसियत बुरी तरह से कमज़ोर हो गई, और वे असंतुष्ट होकर विद्रोह में शामिल हो गए।

उत्तर – एकमुश्त बंदोबस्त ने अवध के तालुकदारों को उनकी सदियों पुरानी ज़मीनों से बेदखल कर दिया, जिससे उनकी सत्ता और आर्थिक स्थिति कमज़ोर हो गई और वे 1857 के विद्रोह में शामिल हो गए।

उदाहरण 10. 1857 के विद्रोह में सिपाहियों की ग्रामीण पृष्ठभूमि ने कैसे योगदान दिया?

› पहला, अंग्रेजों ने अपनी 'बंगाल आर्मी' में ज़्यादातर सिपाही अवध और पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाँवों से भर्ती किए थे।

› दूसरा, ये सिपाही अक्सर ब्राह्मण या ऊँची जातियों के होते थे, यानी समाज में उनका एक खास स्थान था।

› तीसरा, जब अंग्रेजों ने अवध जैसे इलाकों में लगान बढ़ाया, ज़मीनें छीनीं या नवाब को हटाया, तो इन सिपाहियों के परिवारों पर सीधा असर पड़ा।

› चौथा, सिपाहियों को जो शिकायतें थीं - जैसे चर्बी वाले कारतूस, कम वेतन, अंग्रेज़ अफ़सरों का बुरा व्यवहार - उनकी गूँज गाँवों तक जाती थी।

› और पाँचवां, जब सिपाहियों ने विद्रोह किया, तो उनके गाँव के भाई-बिरादर, किसान और आम लोग तुरंत उनके साथ खड़े हो गए, क्योंकि उन्हें सिपाहियों की समस्या अपनी ही लग रही थी।

उत्तर – इस तरह, सिपाहियों की ग्रामीण पृष्ठभूमि ने विद्रोह को सिर्फ़ सेना तक सीमित न रखकर एक बड़ा जन-आंदोलन बना दिया।

उदाहरण 11. 1857 के विद्रोहियों की घोषणाओं में एकता पर कैसे ज़ोर दिया गया था?

› पहला कदम: घोषणाओं में 'हिंदू-मुस्लिम' दोनों को एक साथ 'अधर्मी अंग्रेजों' के खिलाफ लड़ने का आह्वान किया गया।

› दूसरा कदम: यह विद्रोह एक ऐसे युद्ध के रूप में प्रस्तुत किया गया था जिसमें दोनों धर्मों का लाभ-हानि बराबर था।

› तीसरा कदम: मुगल साम्राज्य के तहत विभिन्न समुदायों के सह-अस्तित्व को याद दिलाकर अतीत की एकता का गौरवगान किया गया।

› चौथा कदम: बहादुर शाह के नाम से जारी घोषणा में मुहम्मद और महावीर दोनों की दुहाई देते हुए सबको लड़ाई में शामिल होने को कहा गया।

उत्तर – विद्रोहियों की घोषणाओं में हिंदू और मुस्लिम दोनों को धर्म, जाति या शाही परिवार के भेद के बिना एकजुट होने का

आह्वान किया गया था, यह दर्शाते हुए कि 'फिरंगी राज' के खिलाफ लड़ाई सभी की साझा लड़ाई है।

उदाहरण 12. 1857 के विद्रोह के दौरान दिल्ली में किसने वैकल्पिक सत्ता स्थापित की और किस मुगल बादशाह को समर्थन दिया?

› जब 1857 का विद्रोह शुरू हुआ, तो विद्रोहियों ने सबसे पहले दिल्ली पर कब्जा किया।

› उन्होंने बहादुर शाह ज़फर को अपना नेता और भारत का सम्राट घोषित किया।

› उन्होंने बहादुर शाह ज़फर के नाम पर अपनी प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश की।

उत्तर – 1857 के विद्रोह के दौरान दिल्ली में विद्रोहियों ने मुगल बादशाह बहादुर शाह ज़फर को समर्थन देकर वैकल्पिक सत्ता स्थापित की।

उदाहरण 13. 1857 के विद्रोह को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने कौन से प्रमुख सैन्य और कानूनी उपाय अपनाए?

› सबसे पहले, अंग्रेजों ने पूरे उत्तर भारत में 'मार्शल लॉ' लागू कर दिया। इसका मतलब था कि सामान्य अदालती प्रक्रियाएं बंद कर दी गईं, और अब सैनिक अधिकारी या आम अंग्रेज भी किसी भी हिंदुस्तानी पर, जिस पर विद्रोह में शामिल होने का शक हो, मुकदमा चलाकर उसे तुरंत सजा दे सकते थे।

› दूसरा, उन्होंने कुछ बहुत कठोर नए कानून पारित किए। इन कानूनों के तहत, विद्रोह में शामिल होने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए 'सजा-ए-मौत' ही एकमात्र सजा तय कर दी गई।

› तीसरा, ब्रिटेन से और भी नई सैनिक टुकड़ियां मंगवाई गईं। इन टुकड़ियों के साथ मिलकर अंग्रेजों ने दिल्ली जैसे महत्वपूर्ण केंद्रों पर दो तरफा हमला किया - एक तरफ कलकत्ता से और दूसरी तरफ पंजाब से।

› चौथा, उन्होंने सिर्फ सैन्य बल पर ही निर्भर नहीं किया, बल्कि विद्रोहियों की एकता तोड़ने की कोशिश भी की। जैसे, बड़े भूस्वामियों और जमींदारों को आश्वासन दिया कि अगर वे अंग्रेजों के वफादार रहे तो उनकी जागीरें उन्हें वापस मिल जाएंगी, और जो विद्रोह में शामिल थे उनकी जागीरें छीन ली गईं।

उत्तर – अंग्रेजों ने मार्शल लॉ, कठोर नए कानून, व्यापक सैन्य बल का उपयोग, और वफादार जमींदारों को प्रोत्साहन देकर 1857 के विद्रोह को बेरहमी से कुचलने का प्रयास किया।

उदाहरण 14. 1857 के विद्रोह के दौरान 'इन मेमोरियम' पेंटिंग क्या दर्शाती है और उसका क्या उद्देश्य था?

› देखो बच्चों, 'इन मेमोरियम' जोशेफ नोएल पेटन ने 1859 में बनाई थी।

› इस पेंटिंग में, अंग्रेज औरतें और बच्चे एक घेरे में डरे हुए, एक-दूसरे से लिपटे हुए दिखते हैं, मानो वे हिंसा और मौत का इंतज़ार कर रहे हों।

› इसमें सीधे-सीधे हिंसा नहीं दिखाई गई है, बल्कि एक इशारा है कि कुछ भयानक होने वाला है।

› इसका उद्देश्य ब्रिटेन की जनता में गुस्सा और बेचैनी पैदा करना था, ताकि वे विद्रोहियों के प्रति कठोर कार्रवाई की मांग करें।

› यह पेंटिंग विद्रोहियों को बर्बर और हिंसक दिखाती थी, भले ही वे चित्र में दिखाई न दें।

› यह ब्रिटिश सरकार के प्रति समर्थन जगाने और यह न्यायसंगत ठहराने का एक तरीका था कि विद्रोहियों का दमन क्यों ज़रूरी है।

उत्तर – 'इन मेमोरियम' पेंटिंग में डरी हुई अंग्रेज महिलाएं और बच्चे दिखाए गए, ताकि ब्रिटिश जनता में विद्रोहियों के प्रति गुस्सा पैदा हो और वे कठोर प्रतिशोध का समर्थन करें। यह विद्रोह को कुचलने के लिए एक मनोवैज्ञानिक हथियार था।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह प्रश्न सीधे-सीधे बोर्ड परीक्षा में '1857 के विद्रोह के आरंभ और प्रसार' पर आ सकता है। शुरुआत कहाँ से हुई, दिल्ली क्यों महत्वपूर्ण थी और बहादुर शाह ज़फर की क्या भूमिका थी, इन बिंदुओं पर ध्यान देना।

• यह विद्रोह की कार्यप्रणाली बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 या 5 अंक के प्रश्न में पूछी जाती है। इसे 'विद्रोह का ढर्रा' नाम से भी पूछा जा सकता है।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि विद्रोहियों ने संचार और समन्वय कैसे स्थापित किया। 'पंचायतें' शब्द को ज़रूर याद रखना और इसे विस्तार से समझाना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर प्रश्न पूछा जाता है कि 1857 के विद्रोह में अफवाहों और भविष्यवाणियों की क्या भूमिका थी। इन सभी अफवाहों और भविष्यवाणियों को अच्छे से याद रखना, खासकर उनके प्रभाव को समझाना, बहुत ज़रूरी है।

• यह प्रश्न सीधे-सीधे बोर्ड परीक्षा में 'अफवाहों पर विश्वास के कारण' के रूप में पूछा जा सकता है। इसमें ब्रिटिश नीतियों और उनके प्रभावों का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है, सिर्फ घटनाएँ नहीं लिखनीं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर सीधे प्रश्न आते हैं कि नवाब वाजिद अली शाह के निष्कासन के क्या प्रभाव पड़े और यह 1857 के विद्रोह से कैसे जुड़ा था।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर प्रश्न आते हैं कि विद्रोहियों ने ब्रिटिश शासन के ध्वस्त होने के बाद कैसी व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया और उन्होंने किससे प्रेरणा ली।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर 'ब्रिटिश दमन के उपायों' या 'विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों को क्यों कठिनाई हुई' जैसे प्रश्न आते हैं। इसे अच्छे से तैयार कर लेना।

• बोर्ड परीक्षा में, इन चित्रों का नाम और उनके पीछे के ब्रिटिश उद्देश्यों को याद रखना बहुत ज़रूरी है। अक्सर पूछा जाता है कि ये चित्र ब्रिटिश दृष्टिकोण को कैसे दर्शाते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› मेरठ से शुरू होकर, दिल्ली पहुंचा, बहादुर शाह ज़फर ने नेतृत्व संभाला।

› संकेत से शुरू होकर, सैन्य कार्रवाई, फिर जनभागीदारी से व्यापक विद्रोह बन गया।

› संदेशवाहक, गुप्त पंचायतें, और गोपनीय प्रतीक विद्रोह के संचार आधार थे।

› अफवाहों (चर्बी कारतूस, हड्डी चूरा) और भविष्यवाणियों (प्लासी युद्ध 100 साल) ने विद्रोह भड़काया।

› ब्रिटिश नीतियों (शिक्षा, राज्य हड़पना, भू-राजस्व) ने भारतीयों में गहरा अविश्वास पैदा किया, जिससे अफवाहों पर विश्वास बढ़ा।

› वाजिद अली शाह का 1856 निष्कासन: अवध में भावनात्मक, आर्थिक संकट, विद्रोह का कारण।

› विद्रोहियों ने 1857 में मुगल शैली पर आधारित वैकल्पिक सत्ता बनाने का प्रयास किया।

› अंग्रेजों ने मार्शल लॉ, कठोर कानून, सैन्य बल और फूट डालो नीति से विद्रोह दबाया।

› ब्रिटिश कला: 1857 विद्रोह को महिमामंडित, महिलाओं की 'रक्षा', प्रतिशोध को न्यायसंगत ठहराया।